



237

H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1257
10/191

आह्वानांक Call No. _____

अवधि सं० Acc. No. _____

237

1711

801.431

As 11 As

॥ सत श्री अकाल ॥

वन्देमातरम् ।

अल्लाहो अकबर ।

✽ असहियोग मार्ग प्रचारक ✽

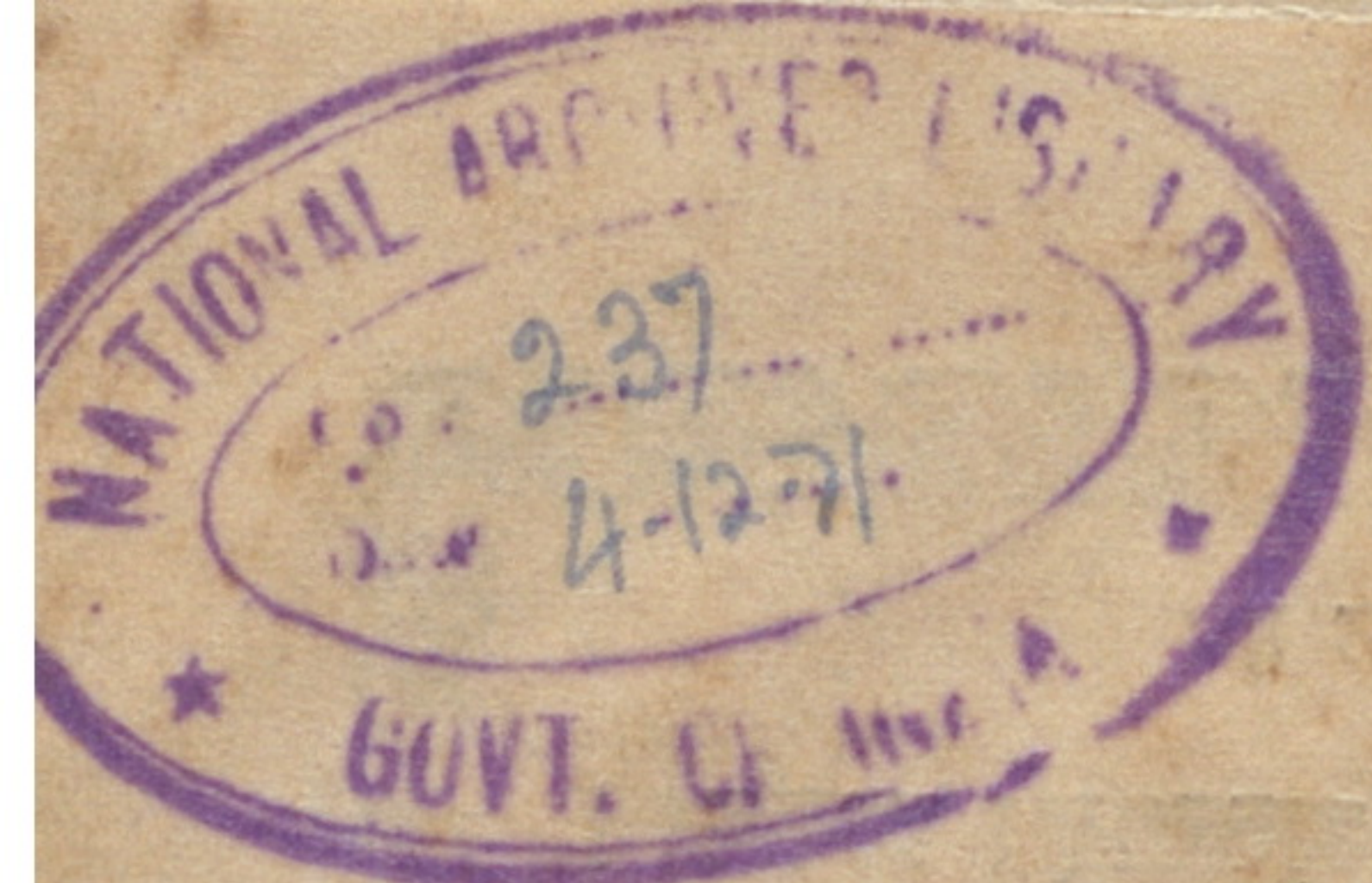


भाग १ व २

प्रकाशक —

रघुवीर प्रसाद शर्मा ।

दफतरा पो० बरौली (अलीगढ़)



[२]

कौबालौ ।

अहो भगवन दया कीजे, कि भारत भी स्वदेशी हो ।

हमारा भाव-मूषा बेष, तन-मन सब स्वदेशी हो ॥

चलें घर २ पुन चखें, शुरु हों काम कर्घों का ।

बने गाढ़ा गजो मलमल, सितन साटन स्वदेशी हो ॥

तजे सब देश बांधव गण, नकल फैशन विदेशी की ।

पुरानी मिर्जई कुर्ता, अंगरखा भी स्वदेशी की ॥

रहें जब तक जगत में हम, करे सेवा स्वदेशी की ।

विलग हो जान तन से जब, कफन अपना स्वदेशी हो ॥

स्वदेशी कल-कला-कौशल, स्वदेशी कारखाने हो ।

नजे आनन्द का डंका, सभी धंधा स्वदेशी हो ॥

हमारी पाठसालाओं के, शिक्षक सब स्वदेशी हो ।

मध्यम देशी भाषा हो, सुशिक्षा भी स्वदेशी हो ॥

स्वदेशी न्याय-न्यायालय, स्वदेशी न्याय कारी हो ।

हमारा कायदा कानून, भी जारी स्वदेशी हो ॥

स्वदेशी हों पुलिस अपनी, स्वदेशी फौज और अफसर ।

स्वदेशी हुकम और हाकिम, हुकमत भी स्वदेशी हो ।

स्वदेशी की विजय बंशी, रहे बजती सदा दिल में ।

स्वदेशी तान पूरे का, तरानी भी स्वदेशी हो ॥

अशास्त्र

येरी मो बहिन चर्खा चलालो लाज भारत की अब तुम वचालो ।

तुमसे इअत खिलाफत की होगी । शान भारत की तुमसे बचेगी ॥

शाम दुश्मन की अबतुम घटालो ॥ मेरी यां बहिन ॥

जिसने काबा पै गोली चलाई । उसको बरबाद करोगे इलाही ॥

तुमभी दुश्मन की इज्जत घटालो ॥ मेरी मां बहिन ॥

है नसीहत मुहम्मद अली की यही कहते हैं शौकत अली भी ।

अबतो चरखे से पैसा कमालो ॥ मेरी मां बहनो ॥

सारे भारत का है जो प्यारा हिन्दु मुसलिम की आखों का तारा ।

कहता गांधी है इज्जत बचालो ॥ मेरी मा बहिनो ॥

तुमने भरदी जो दुश्मनकी झोली बनाई तोप बंदूककी उसने गोली ।

तुमभी चरखे की तोपें बनालो ॥ मेरी मां बहिनो ॥

छोड़ चरखा जो तुमने दिया है घेर दुश्मनने हमको लिया है ।

अबतो दुश्मन के छक्के छुड़ालो ॥ मेरी मा बहिनो ॥

छीन लिया हमसे काबा मदीना हाथ कैसा मुकदर है घूमा ।

अबतो दारुल खिलाफत बचालो ॥ मेरी मा बहिनो ॥

तोप भाला वनेगा ये खहर जान दुश्मन की लेगा ये खदर ;

और धागे के तीरें बनालो ॥ मेरी मा बहिनो ॥

सबसे कहता है गांधी प्यारा यही कहता है शौकत हमारा ।

छोड़ कपड़े विदेशी जलालो ॥ मेरी मां बहनो ॥

बी अम्मा का पैगाम ।

बोली अम्मा मुहम्मद अलीकी जानबेटा खिलाफत पै देदो

साथ तेरे हैं शौकत अली भी जान बेटा ।

सघरसे जेलखानेमें रहना । जो मुसीबत पड़े उसको सहना

कीजियो अपनी अम्मा का कहना ॥ जान ॥

बूढ़ी अम्मा का कुछ गम न करना कलमा पढ़कर खिलाफत पै मरना

पूरे इस इमतिहा पै उतरना ॥ जान ॥

गर ज़रा सुस्त देखूंगी तुम को दूध हरगिज न चखूंगी तुमको

यै दिलावर न समझूंगी तुमको ॥ जान ॥

मेरे बच्चों को मुझसे छुड़ायादिल हकूमत ने मेरा दुखाया

इस बुढ़ापे मे मुझको सताया ॥ जान ।

अबमेरी हक से फरयाद होगी । गैब से मेरी इमदाद होगी

मेरी मेहनत न बरबाद होगी ॥ जान ॥

होते मेरे अगर ७ बरै सबको करती खिलाफत के सद्के ।

है यही दोन अहमद के रस्ते ॥ जान० ॥

काले याने खुसी होके जाना सज़दा शुक्र में सर झुकाना ।

तै पढ़ुगी खुदा का दुगाना ॥ जान०॥

हिन्द का अब तो कदम यारों कड़ी मजिल में है ।

दिन दहाड़े लूट रहे अब जां बड़ी मुश्किल में है ॥ १ ॥

जुलम नादिरशाह भी है आज शर्माया हुआ ।

आह की आवाज गूँजी हर मकानों बिल में है ॥ २ ॥

क्या हुआ हम से, छिनाया जो हमारा गान्धी ।

उस का तो फोटू खिचा हर आँख के हर बिल में है ॥ ३ ॥

ह न मुतलक खौफ इनके जोर जुल्मों का हमें ।
 मुत्क पर मरने की मुद्दत से तमन्ना भी दिल में है ॥४॥
 ऐ गनीसो खूब तुम ने जख्म पर छिड़का निमक ।
 दर्द जिसका आज तक बाकी दिले बिसमिल में है ॥५॥
 संग दिल हम आह से गिघलायेंगे ऐ वे नसीब ।
 यह असर तो बाद मुर्दन भी हमारे दिल में है ॥६॥
 टल नहीं सकता कभी तुम जोर करके देख लो ।
 मिस्ले अंगद की कदम आप की महफिज में है ॥७॥
 तोप की आवाज तो जाती है दस या पांच माल ।
 अग्ने चर्खे की भनक तो मानचिस्टर मिल में है ॥८॥

असयोग मार्ग प्रचारक भाग ?

प्रार्थना ।

गर माल सब नज़र हो सेवा में तेरी भारत ।
 गर जिन्दगी असर हो सेवा में तेरी भारत ॥१॥
 फट जाय अशमां ये सरये पडाडो ।
 लवलीन मैं रहूंगा सेवा तेरी भारत ॥२॥
 उल्टे कभी ये दरिया आजाय और आफत ।
 मरने की तमन्ना सेवा तेरी भारत ॥३॥
 जाना भला उसीका सेवा में मर चुके जो ।
 हम भी अभी मरेंगे सेवा में तेरी भारत ॥४॥

सारी ज़हां शियांना फर्मान हो तेरी मादर ।

जिंदा है जोकि मरता सेवामें तेरी भारत ॥५॥

जिन्नत निशान तेरे बच्चे सिखा रहे हैं ।

कुरवान ज़ां हमारी सेवा में तेरी भारत ॥६॥

गजल शाक मय ।

पापियों ! पंजा तुम्हारा पड़ गया पंजाब पर ।

जालिमो ! तुमने शिकंजा कस लिया पंजाब पर ॥१॥

अमृत सरोवर को सरासर खून ही सर कर दिया ।

भूल कर नेको हुए तुम बेहया पंजाब पर ॥२॥

मारशाला का बखेड़ा खून ही फैला दिया ।

कौम के खूं का जलाया हा दिया पंजाब पर । ३॥

रेंग कर हमको चलाया प्यास से सारा हमें ।

नाक घिस चाई न कुछ आई दया पंजाब पर ॥४॥

जिन कलेजों से तुम्हारी जान जरमन से बची ।

उन कलेजों का बना कर मय पिया पंजाब पर ॥५॥

फूल का बदला कहो क्यों शूल से तुमने दिया ।

हल्ला है आंख में जो बुछ किया पंजाब पर ॥६॥

सांप की सन्तान कासा, क्यों हुआ अन्याय है ।

दूध देते भी भूला क्यों फन छिया पंजाब पर ॥७॥

नैपोलियन से आपकी पंजाब ने लज्जा रखी ।

हम कहे "इङ्ग्लैंड" भारतमें जिया पंजाब पर । ८॥

पारटी अपनी कोमी बनाकर । लेंगे स्वराज्य ससुराल जाकर ॥
 अब तो चमका मुकद्दर का तारा । रंजो गम दूर होगा हमारा ॥
 नारा अल्लाहो अकबर लगाकर । लेंगे स्वराज्य ०
 डर नहीं जेलखाने से हमको । काम मतलब वरारी से हमको ॥
 जाते हैं हैं जेल खुशियां मनाकर । लेंगे स्वराज्य ०
 जेलखाना है ससुराल का घर । घर से ससुराल के माल को भर ॥
 सरपै दुशमन के डंका बजाकर । लेंगे स्वराज्य ०
 तान ली हम पै दुशमन ने गोला । छीन ली हमसे सब जरकी भोली ॥
 हमभी दुशमन के छक्के छुड़ा कर । लेंगे स्वराज्य ०
 छीन ली जिसने अपनी हकूमत । और दिखाई हमें ऐसा जिल्लत ॥
 ऐसे ज़ालिम से उल्फ़त हटा कर । लेंगे स्वराज्य ०
 जेलखाना है ससुराल सबकी । उसमें जाकर के पीसेंगे चक्की ॥
 नाम जिन्दों में अब हम लिखाकर । लेंगे स्वराज्य ०
 हैं जो हिन्दू मुसलमां का प्यारा । और हिन्दोस्तां का सितारा ॥
 उनको सरदार अपना बनाकर । लेंगे स्वराज्य ०
 मरद तैदान हैं गांधी जी का । और किचलू व शोक़तअली का ॥
 हुक्म दिल और जो से बजाकर । लेंगे स्वराज्य ०
 जाके ससुराल में हम ये यारो । वह करश्मे दिखायेंगे प्यारो ॥
 ज़ालिम व काफ़िर को अब हम मिटा मर लेंगे स्वराज्य ०
 फैंक दो सारी चीजों विदेशी । तोड़ डालो हून ख्वाब कैसी ॥

अपनी सब चीज़ देशी बनाकर । लेंगे स्वराज्य ०

तुम हमारा न कुछ रंज करना । कौम पर जो और दिल से मरना ॥

हमलो दुशमन का बेड़ा डुबा कर । लेंगे स्वराज्य ०

नौकरी छोड़दो ज़ालिमों की । फौज कोर्ट, और पुलिस की ॥

इस गुलामी से तुमको बचा कर । लेंगे स्वराज्य ०

या इलाही हमें जो सतावे । वो दुनिया में हर्गिज़ न पावे ॥

तेरी रहमत को हम राह लेकर । लेंगे स्वराज्य ०

गजल ।

चुन २ के फूल लेलो अरमान रह न जाये ।

यह हिन्द का बगीचा गुलज़ार रह न जाये ॥१॥

यह वह चमन नहीं है, लेने से होवे उजड़ा ।

उलफत का इसमें कुछ भी अहसान रह न जाये ॥२॥

करदो ज़वान बन्दी, जेलों में चाहे भेजो !

मादर पै होना कोई, कुर्बान रह न जाये ॥३॥

छल अरु फरेब से तुम भारत का माल लेलो ।

उसके गुज़र का कोई सामान रह न जाये ॥४॥

मारो मशीन गनसे या बोलो मारशल्ला ।

ईसा मसीह की भी, कुछ आन रह न जाये ॥५॥

समाप्त